संख्या– /XXVI /2005

प्रेषक,

टीकम सिंह पंवार,
संयुक्त सचिव,
उत्तरांचल शासन।

सेवा में,

निदेशक,
अर्थ एवं संख्या निदेशालय,
उत्तरांचल, देहरादून।

नियोजन अनुभाग देहरादून: दिनांक 31 मार्च, 2005

विषय:–**अर्थ एवं संख्या निदेशालय हेतु वित्तीय वर्ष 2004–05 में अतिरिक्त धनराशि की स्वीकृति।**

महोदय,

उपर्युक्त विषयक शासनादेश संख्या–203/02–XXVI/2004, दिनांक 23 मार्च, 2005 के संलग्नक बी0एम0–15 पर अंकित समस्त प्रविष्टियों एवं शुद्धि पत्र संख्या–287/XXVI/2005, दिनांक 28 मार्च, 2005 निरस्त करते हुए मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि राज्यपाल महोदय उक्त शासनादेश के संलग्नक बी0एम0–15 को निरस्त कर अब संलग्न बी0एम0–15 अनुसार संशोधित बी0एम0–15 निर्गत किये जाने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं। उक्त सन्दर्भित शासनादेश में केवल बी0एम0–15 ही इस सीमा तक संशोधित समझा जाय।

यह आदेश वित्त विभाग के अशासकीय संख्या–2083/वि0अनु0–3/2005, दिनांक 31 मार्च, 2005 में प्राप्त उनकी सहमति से जारी किये जा रहे हैं।

संलग्नक–यथोपरि

भवदीय,

(टीकम सिंह पंवार)
संयुक्त सचिव।

संख्या–323 (1) /XXVI /2005, तद्दिनांक :

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित :–

1– महालेखाकार, उत्तरांचल, ओबराय बिल्डिंग, सहारनपुर रोड, देहरादून।
2– वरिष्ठ कोषाधिकारी, देहरादून।
3– निदेशक, अर्थ एवं संख्या निदेशालय, उत्तरांचल, देहरादून।
4– वित्त अनुभाग–3, उत्तरांचल शासन।
5– समन्वयक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, सचिवालय परिसर, देहरादून।
6– गार्ड फाईल।

आज्ञा से,

(टीकम सिंह पंवार)
संयुक्त सचिव।

पुनर्विनियोग-2004-05 विवरण पत्र

प्रशासनिक विभाग- नियोजन विभाग । नियन्त्रक अधिकारी- सचिव, नियोजन । आयोजनेत्तर (धनराशि हजार रुपये में) अनुदान संख्या-07

बजट आयोजन तथा उपशीर्षक का विवरण	मानक मदवार वास्तविक व्यय	वित्तीय वर्ष के शेष अवधि में अनुमानित व्यय	अवशेष धनराशि (सरप्लस)	लेखाशीर्षक जिसमें धनराशि स्थानान्तरित किया जाना है	पुनर्विनियोग के बाद स्तम्भ-5 की कुल धनराशि	पुनर्विनियोग के बाद स्तम्भ-01 में अवशेष धनराशि	टिप्पणी
1	2	3	4	5	6	7	8
3454-जनगणना सर्वेक्षण तथा सांख्यिकी-02-सर्वेक्षण तथा सांख्यिकी-आयोजनेत्तर-001-निदेशन तथा प्रशासन-03- अर्थ एवं संख्या अधिष्ठान-26-मशीन एवं सज्जा/उपकरण और संयंत्र- 235	—	—	235 (क)	3454-जनगणना सर्वेक्षण तथा सांख्यिकी 02-सर्वेक्षण तथा सांख्यिकी-आयोजनेत्तर 001-निदेशन तथा प्रशासन 03-अर्थ एवं संख्या अधिष्ठान-12-कार्यालय फर्नीचर एवं उपकरण – 235 (ख)	435	–	(क) आवश्यकता न होने के कारण । (ख) अधिक आवश्यकता होने एवं उसके विपरीत बजट प्राविधान कम होने के कारण ।
योग- 235	—	—	235	235	435	–	

प्रमाणित किया जाता है कि पुनर्विनियोग के बजट मैनुअल के परिच्छेद- 150, 151, 155, 156 में उल्लिखित प्रतिबन्धों एवं सीमाओं का उल्लंघन नहीं होता है ।

(टीकम सिंह पंवार)
संयुक्त सचिव।
2

C:\Ghan\Bu-15-Format-04

उत्तरांचल शासन

वित्त अनुभाग–3

संख्या– 733(1)/वि0अनु0–03/2005

देहरादून: दिनांक 24 मार्च 2005

पुनर्विनियोग स्वीकृत।

के0सी0मिश्र

अपर सचिव

सेवा में,

महालेखाकार,उत्तरांचल,

ओबराय मोटर्स बिल्डिंग,

सहारनपुर रोड, देहरादून।

संख्या–223/02–XXVI /2004–05, तद्दिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:–

1– वरिष्ठ कोषाधिकारी, देहरादून।

2– वित्त अनुभाग–03, उत्तरांचल शासन।

आज्ञा से,

(टीकम सिंह पंवार)

संयुक्त सचिव।